Economic Development and Measurement

आर्थिक विकास का अर्थ तथा माप

Dr. Namita Verma
Academic Consultant
Dept. of Economics
Uttarakhand Open University

‘अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में

उत्पादकता को बढ़ाना ही

आर्थिक विकास कहलाता है.’

‘आर्थिक विकास से अभिप्राय राष्ट्रीय आय में वृद्धि कर के निर्धनता को दूर करना तथा जीवन स्तर में सुधार करना है’

मायर व बाल्डविन
Meier & Baldwin

'आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है
जिसमें दीर्घकाल में
किसी अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में
वृद्धि होती है'

प्रो. लुईस
PROF. LEWIS

‘आर्थिक विकास का अर्थ प्रति-व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि से लगाया जाता है’

प्रो. विलियमसन
Prof. Williamson

'आर्थिक विकास अथवा वृद्धि से उस प्रक्रिया का बोध होता है जिसके द्वारा किसी देश अथवा प्रदेश के निवासी उपलब्ध साधनों का उपयोग, प्रति-व्यक्ति वस्तुओं के उत्पादन में, निरंतर वृद्धि के लिए करते हैं'

इन परिभाषाओं से तीन महत्वपूर्ण बातें समान रूप से परिलक्षित होती हैं

- प्रक्रिया (Process) – आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है
- वास्तविक राष्ट्रीय आय (Real National Income) – राष्ट्र द्वारा एक निश्चित काल में उत्पादित समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं विशुद्ध मूल्य में होने वाली वृद्धि से लगाया जाता है न कि मौद्रिक आय की वृद्धि से
- दीर्घकालीन अथवा निरंतर वृद्धि (Long Term and Continuous Increase) – आर्थिक विकास का सम्बन्ध अल्पकाल से न होकर दीर्घकाल से होता है

आर्थिक विकास व आर्थिक वृद्धि में अंतर

आर्थिक वृद्धि

- स्वाभाविक, क्रमिक व् स्थिर गति वाला परिवर्तन
- केवल उत्पादन में वृद्धि का होना
- आर्थिक व संस्थागत घटकों में परिवर्तन होने पर स्वतः ही घटित होती रहती है
- वर्तमान साम्य की अवस्था में कोई आधारभूत परिवर्तन नहीं होता
- आर्थिक उन्नति नियमित घटनाओं का परिणाम है
- यह उन्नत देशों की समस्या का समाधान है
- आर्थिक वृद्धि स्थैतिक साम्य की स्थिति है

आर्थिक विकास

- प्रेरित व असतत प्रकृति का परिवर्तन
- उत्पादन वृद्धि+प्राविधिक एवं संस्थागत परिवर्तनों का होना
- विकास के लिए संरचनात्मक परिवर्तनों का किया जाना आवश्यक है
- नई शक्तियों से नए मूल्यों का निर्माण किया जाता है तथा प्रचलित साम्य में सुधार लाये जाते हैं
- आर्थिक विकास उन्नति की प्रबल इच्छा एवं विशेष निर्देशन व सृजनात्मक शक्तियों का परिणाम है
- यह अल्पविकसित देशों की समस्याओं को हल करने का एक समाधान है
- आर्थिक विकास प्रावैगिक साम्य का एक रूप है

आर्थिक विकास की प्रकृति
Nature of Economic Development

स्थैतिक अर्थशास्त्र (Static Economics)

Static शब्द का सामान्य अर्थ है 'स्थिर' रहना

अर्थशास्त्र में स्थैतिक शब्द का आशय गतिहीन अवस्था से नहीं होता बल्कि उस अवस्था से होता है जिसमें परिवर्तन तो हो परन्तु इन परिवर्तनों की गति अत्यंत कम हो

आर्थिक विकास की प्रकृति
Nature of Economic Development

प्रो. हैराड के अनुसार "एक स्थैतिक संतुलन का अर्थ विश्राम की अवस्था से नहीं होता बल्कि उस अवस्था से होता है जिसमें कार्य निरंतर रूप से दिन-प्रतिदिन अथवा वर्ष-प्रतिवर्ष हो रहा हो परन्तु उसमें वृद्धि अथवा कमी न हो रही हो

इस सक्रिय परन्तु परिवर्तनीय प्रक्रिया को स्थैतिक अर्थशास्त्र कहा जाता है

आर्थिक विकास की प्रकृति
Nature of Economic Development

प्रावैगिक अर्थशास्त्र (Dynamic Economics)

प्रो. हैराड (Harrod) के अनुसार :-

प्रावैगिक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध विशेषतया निरंतर परिवर्तनों के प्रभाव तथा निर्धारित किये जाने वाले मूल्यों में परिवर्तन की दरों से होता है

आर्थिक विकास की प्रकृति
Nature of Economic Development

प्रो. जे.बी.क्लार्क (J B Clark) के अनुसार प्रावैगिक अर्थशास्त्र के प्रमुख पाँच लक्षण निम्नवत हैं :-

1 जनसंख्या में वृद्धि
2 पूँजी व पूँजी निर्माण में वृद्धि
3 उत्पादन विधियों में सुधार
4 औद्योगिक संगठनों के स्वरूपों में परिवर्तन
5 उपभोक्ता की आवश्यकताओं में वृद्धि

आर्थिक विकास की प्रकृति
Nature of Economic Development

अतः यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास गत्यात्मक (dynamic) प्रकृति का है

आर्थिक विकास का माप या अभिसूचक
Measurements or Indicators of Economic Development

- राष्ट्रीय आय वृद्धि मानदण्ड

  Increase in National Income Criteria

मायर एवं बाल्डविन, कुट्नेट्स, यंग्सन व मीड जैसे विकासवादी अर्थशास्त्रियों ने किसी देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि को उस देश के आर्थिक विकास का सूचक माना है.

दूसरे शब्दों में यदि किसी देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो रही है तो यह वृद्धि उस देश के आर्थिक विकास की एक कसौटी मानी जाएगी, बशर्ते ये वृद्धि निरंतर व स्थाई हो

आर्थिक विकास का माप या अभिसूचक
Measurements or Indicators of Economic Development

- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि मानदण्ड
  Per Capita Income Criteria

आधुनिक समय में अधिकाँश अर्थशास्त्रियों का मत है कि राष्ट्रीय आय आर्थिक विकास का सही मानदण्ड नहीं है बल्कि देश में प्रति व्यक्ति आय में होने वाली वृद्धि को उस देश में आर्थिक विकास के अभिसूचक के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए

इसका कारण यह है कि अल्पविकसित देशों में मुख्य समस्या जीवन स्तर में सुधार करने की होती है और जीवन स्तर का प्रत्यक्ष सम्बन्ध प्रति व्यक्ति आय से होता है

आर्थिक विकास का माप या अभिसूचक
Measurements or Indicators of Economic Development

- आर्थिक कल्याण वृद्धि मापदण्ड
  Economic Welfare Criteria

यह मानदण्ड राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय के स्थान पर लोगों के आर्थिक कल्याण या जीवन स्तर को आर्थिक विकास की कसौटी स्वीकार करता है

ओकन व रिचर्डसन (Okun and Richardson) का कहना है कि यह आवश्यक नहीं है कि राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय के बढ़ने पर लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि हो जाए. जीवन स्तर मुख्यतः उपभोग के स्तर पर निर्भर रहता है इसलिए देश में बढ़ता हुआ उपभोग व जीवन स्तर ही आर्थिक विकास का अभिसूचक है

आर्थिक कल्याण वृद्धि मापदण्ड के दोष.
Shortcomings in Economic Welfare Criteria

इस मानदण्ड में कुछ विरोधाभास भी पाए जाते हैं, जैसे :-

1 अल्पविकसित देशों में उपभोग वृद्धि पहले से ही अधिक होती है और इन देशों में उपभोग को कम करने के प्राय: प्रयत्न भी किये जाते हैं ताकि बचत में वृद्धि होकर अधिक पूँजी निर्माण संभव हो सके

2 उपभोग व जीवन स्तर अत्यंत भ्रमात्मक शब्द हैं जिनकी निरपेक्ष माप संभव नहीं है

3 कल्याण के दृष्टिकोण को स्वीकार करने पर हम केवल यह नहीं देखते कि क्या और कितना उत्पादित किया जा रहा है बल्कि कैसे उत्पादित किया गया है, यह भी देखना होगा. हो सकता है राष्ट्रीय प्रदा के बढ़ने के साथ-साथ वास्तविक व सामाजिक लागतों (पीड़ा, त्याग, शोषण, नैतिक पतन आदि) में भी वृद्धि हो जाए और जो कि आर्थिक कल्याण को पुनः सीमित कर दें